Impact Factor 4.574

ISSN 2349-638x

Refereed And Indexed Journal

AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (AIIRJ)

Monthly Journal

VOL-V ISSUE-V May 2018

Address
- Vikram Nagar, Boudhi Chouk, Latur.
- Tq. Latur, Dis. Latur 413512 (MS.)
- (+91) 9922455749, (+91) 8999250451

Email
- aiirjpramod@gmail.com
- aayushijournal@gmail.com

Website
- www.aiirjournal.com

CHIEF EDITOR – PRAMOD PRAKASHRAO TANDALE

शारीरिक शिक्षको की अधिशिक्षा योग्यता का खिलाडीयोके प्रदर्शनपर होनेवाला प्रभाव – एक अध्ययन

डॉ.रियाज उद्दीन
ओपीजेएस विद्यापीठ, चुरू, राजस्थान

पिंकी शर्मा
ओपीजेएस विद्यापीठ, चुरू, राजस्थान

१.० प्रस्तावना

मानव के जीवन मे क्रीडा शारीरिक एवंम मानसिक विकास की दृष्टि से आवश्यक कार्य है। दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक, समाजशास्त्रीय, शिक्षाशास्त्रीय, मानसशास्त्रीय तथा मनोरंजनात्मक ज्ञानविद खेलो को इनता महत्व देते है कि इनकी सम्प्रेरणा के लिए अनेक सिद्धान्तो का प्रतिपादन किया जाता है। मानव जीवन में क्रीड़ा अत्यन्त महत्वपूर्ण क्रिया है। इसके द्वारा वह कुछ अवसर प्राप्त करता है, जैसे, नियंत्रण अथवा दक्षता ग्रहण करता है, इच्छापूर्ति के अवसरों का उपयोग करता है, कल्पना के द्वारा वास्तविक जीवन से कुछ समय के लिए पृथकता प्राप्त करता है, क्रियाओं के माध्यम से भावनाओं को व्यक्त करने का अवसर मिलता है (देशमुख, १९९४)। आज खेल एवं शिक्षा एक दूसरे के साथ इस कदर जुड़े है कि खेल को शिक्षा से पृथक् नहीं किया जा सकता है (कावडे, २०११)।

१.१ शारीरिक शिक्षा में अधिशिक्षा का महत्व

अधिशिक्षा का अर्थ है सिखलाना। खेलों के कौशल्यों का उचित एवं आकर्षक प्रदर्शन कर अच्छे परिणामों को प्रकट करना ही अधिशिक्षा कहलाता है। अधिशिक्षा के नियमों का पालन कर खिलाड़ी अपने उद्देश्य की प्राप्ति शीघ्र कर लेता है। अधिशिक्षा द्वारा खिलाड़ियों को खेल के तकनीकी नियम, अभ्यास तथा खेल के दौरान उत्पन्न हुई स्थितीयों का सामना करना सिखाया जाता है। अधिशिक्षा द्वारा शिक्षक कमजोर खिलाड़ीयों को भी उच्च स्तर तक पहुंचाने का प्रयास करता है। अधिशिक्षक ही खिलाड़ी का उचित मार्गदर्शन कर उसे चुस्त, तंदुरूस्त, आकर्षक, सुडौल तथा गठीले बदल वाला बना सकता है। खिलाड़ी के शारीरिक विकास का पता लगाने के लिए परीक्षण, मापन तथा मूल्यांकन की पध्दती अपनाई जाती है। उसी के अनुसार ही खिलाड़ी का शारीरिक विकास करना चाहिए। उपरोक्त वस्तुस्थिति को ध्यान में रखते हुये अनुसंधानकर्ता ने शहरी तथा ग्रामीण संभाग के शारीरिक शिक्षको की अधिशिक्षा योग्यता एवं मानसिक स्वास्थ्य का खिलाडीयोके प्रदर्शनपर होनेवाले प्रभाव अध्ययन किया।

२.० अभ्यास की पद्धति

प्रस्तुत अनुसंधान के लिए वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अनुसंधान अभिकल्प तैयार किया गया। अनुसंधान कर्ता ने प्रस्तुत अध्ययन के लिए कुछ प्रमुख उद्देश्य विकसित किये इसके आधार पर वैज्ञानिक परिकल्पनाओं की निर्मिती के उद्देश्यों पूर्ति एवं परिकल्पनाओं की जांच करने के लिए वैज्ञानिक अनुसंधान प्रारुप का प्रयोग करना तय किया गया है। इस अनुसंधान के लिए तैयार किया गया विश्लेषणात्मक अनुसंधान प्रारुप निम्न प्रकार से है।

२.१ अध्ययनविश्व एवं विषयो का चुनाव :

अध्ययन विश्व में नागपूर विभाग (नागपूर, भंडारा, चंद्रपूर, गडचिरोली, वर्धा तथा गोंदिया जिला) के ग्रामीण एवं शहरी संभाग के सभी शारीरिक शिक्षक शामील थे। इसके अंतर्गत विदर्भ के नागपूर विभाग (नागपूर,

भंडारा, चंद्रपूर, गडचिरोली, वर्धा तथा गोंदिया जिला) का चुनाव किया गया। इन ६ जिलों के ग्रामीण (१५०) एवं शहरी संभाग (१५०) के शारीरिक शिक्षको का चयन रेण्डम पद्धति का उपयोग करके किया गया।

२.२ तथ्य संकलन विधि एवं तकनिक

प्रस्तुत अनुसंधान के लिए शोधकर्ता ने दत्य संकलन के लिए वैज्ञानिक विधि पर आधारित दत्य संकलन प्रारूप विकसित किया गया दत्य संकलन प्राथमिक (प्रश्नावली विधी) एवं द्वितीय दोनों स्त्रोतोसे/माध्यमों द्वारा किया गया है। प्रस्तुत अनुसंधानकार्य में सर्वेक्षण पद्धति के माध्यम से तथ्यो का संकलन किया गया।

२.३ तथ्य संकलन करने के लिये उपकरण

अधिशिक्षा योग्यता :— शारीरिक शिक्षको की अधिशिक्षा योग्यता का मापन संरचित प्रश्नावली के उपयोग से किया गया

२.४ तथ्य प्रक्रियन :

तथ्य विश्लेषण व निर्वचन सारणी करण के पश्चात सांख्यिकीय सारणियों का नियम बद्ध व उद्देश्य पूर्ण विश्लेषण किया गया। 'Chi-Square' Test और Pearson Product Moment Correlation Coefficient Test का चयन किया गया। Significance level 0.05 तय की गयी।

३.० सांख्यिकीय विश्लेषण एवं परिणाम – अधिशिक्षा योग्यता परीक्षण

३.१ खिलाड़ीयों को शारीरिक शिक्षण प्रदान करते समय ध्यान में रखी जाने वाली विशेष बाते

तालिका क्र. १: खिलाड़ीयों को शारीरिक शिक्षण प्रदान करते समय ध्यान में रखी जाने वाली विशेष बाते

	शहरी		ग्रामीण	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
गति से संबंधित संकल्पना एवं कौशल	५८	३८.७	६५	४३.३
व्यक्तिगत गतिविधि	२७	१८.०	२२	१४.७
सांघिक गतिविधि	३९	२६.०	५८	३८.७
जल क्रीडा/ गतिविधि	२६	१७.३	५	३.३
कुल	१५०	१००.०	१५०	१००.०

तालिका क्र. १ मे अध्ययन हेतु चयनित ग्रामीण तथा शहरी संभाग के शारीरिक शिक्षकों द्वारा शारीरिक शिक्षण प्रदान करते समय ध्यान में रखी जाने वाली विशेष बातें दर्शाई गई है। प्राप्त जानकारी के अनुसार अध्ययन हेतु चयनित शालेय शिक्षकों मे शहरी संभाग के ३८.७ प्रतिशत तथा ग्रामीण संभाग के ४३.३ प्रतिशत शिक्षक छात्रों को गति से संबंधित संकल्पना एवं कौशल के बारे में जानकारी प्रदान करते हैं वहीं शहरी तथा ग्रामीण संभाग में व्यक्तिगत गतिविधि संबंधित जानकारी का विशेष ध्यान रखनेवाले शारीरिक शिक्षकों का प्रतिशत प्रमाण क्रमश: १८.० तथा १४.७ प्रतिशत था। उसी प्रकार शहरी संभाग के २६.० प्रतिशत तथा ग्रामीण संभाग के ३८.७ प्रतिशत शिक्षक छात्रों को सांघिक गतिविधियों का ज्ञान प्रदान करते हैं वहीं शहरी संभाग के १७.३ प्रतिशत तथा ग्रामीण संभाग के ३.३ प्रतिशत शिक्षक छात्रों को जल क्रीडा से संबंधित गतिविधियों का ज्ञान प्रदान करते हैं।

३.२ खेल प्रशिक्षण के लिए चुनी जाने वाली जगह एवं उसकी दिशासंबंधीत जागरूकता लोकोमोटर कौशल जैसे– पैदल चलना, रस्सी कूदना, फुदकना

तालिका क्र. २: खिलाड़ीयों को लोकोमोटर कौशल जैसे– पैदल चलना, रस्सी कूदना, फुदकने का प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए चुनी जाने वाली जगह एवं उसकी दिशासंबंधीत जागरूकता

	शहरी		ग्रामीण	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
अत्याधिक	७८	५२.०	९४	६२.७
साधारण	४९	३२.७	३९	२६.०
निम्न	२३	१५.३	१७	११.३
कुल	१५०	१००.०	१५०	१००.०

तालिका क्र. २ मे अध्ययन हेतु चयनित ग्रामीण तथा शहरी संभाग के शारीरिक शिक्षकों द्वारा लोकोमोटर कौशल जैसे– पैदल चलना, रस्सी कूदना, फुदकने का प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए चुनी जाने वाली जगह एवं उसकी दिशासंबंधीत जागरूकता दर्शाई गई है। प्राप्त जानकारी के अनुसार अध्ययन हेतु चयनित शालेय शिक्षकों मे शहरी संभाग के ५२.० प्रतिशत तथा ग्रामीण संभाग के ६२.७ प्रतिशत शिक्षकों का प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए चुनी जाने वाली जगह एवं उसकी दिशा से संबधित जागरूकता का स्तर अत्याधिक पाया गया वहीं शहरी तथा ग्रामीण संभाग के शिक्षकों का प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए चुनी जाने वाली जगह एवं उसकी दिशा से संबधित साधारण जागरूकता का स्तर क्रमश: ३२.७ तथा २६.० प्रतिशत था। उसी प्रकार शहरी संभाग के १५.३ प्रतिशत तथा ग्रामीण संभाग के ११.३ प्रतिशत शिक्षकों का प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए चुनी जाने वाली जगह एवं उसकी दिशा से संबधित जागरूकता का स्तर निम्न पाया गया।

३.३ जोड–तोड के कौशल जैसे – फेंकना, पकडना, किक मारना

तालिका क्र. ३: खिलाड़ीयों को जोड–तोड के कौशल जैसे– फेंकना, पकडना, किक मारने का प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए चुनी जाने वाली जगह एवं उसकी दिशासंबंधीत जागरूकता

	शहरी		ग्रामीण	
	संख्या	**प्रतिशत**	**संख्या**	**प्रतिशत**
अत्याधिक	४१	२७.३	६९	४६.०
साधारण	७४	४९.३	५४	३६.०
निम्न	३५	२३.३	२७	१८.०
कुल	१५०	१००.०	१५०	१००.०

तालिका क्र. ३ मे अध्ययन हेतु चयनित ग्रामीण तथा शहरी संभाग के शारीरिक शिक्षकों द्वारा जोड–तोड के कौशल जैसे– फेंकना, पकडना, किक मारने का प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए चुनी जाने वाली जगह एवं उसकी दिशासंबंधीत जागरूकता दर्शाई गई है। प्राप्त जानकारी के अनुसार अध्ययन हेतु चयनित शालेय शिक्षकों मे शहरी संभाग के २७.३ प्रतिशत तथा ग्रामीण संभाग के ४६.० प्रतिशत शिक्षकों का प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए चुनी जाने वाली जगह एवं उसकी दिशा से संबधित जागरूकता का स्तर अत्याधिक पाया गया वहीं शहरी तथा ग्रामीण

संभाग के शिक्षकों का प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए चुनी जाने वाली जगह एवं उसकी दिशा से संबधित साधारण जागरूकता का स्तर क्रमश: ४९.३ तथा ३६.० प्रतिशत था। उसी प्रकार शहरी संभाग के २३.३ प्रतिशत तथा ग्रामीण संभाग के १८.० प्रतिशत शिक्षकों का प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए चुनी जाने वाली जगह एवं उसकी दिशा से संबधित जागरूकता का स्तर निम्न पाया गया।

३.४ गैर–लोकोमोटर कौशल जैसे झुकाव, मोडना

तालिका क्र. ४: खिलाड़ीयों को गैर–लोकोमोटर कौशल जैसे झुकाव, मोडने का प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए चुनी जाने वाली जगह एवं उसकी दिशासंबंधीत जागरूकता

	शहरी		ग्रामीण	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
अत्याधिक	३४	२२.७	६९	४६.०
साधारण	६६	४४.०	४७	३१.३
निम्न	५०	३३.३	३४	२२.७
कुल	१५०	१००.०	१५०	१००.०

तालिका क्र. ४ मे अध्ययन हेतु चयनित ग्रामीण तथा शहरी संभाग के शारीरिक शिक्षकों द्वारा गैर–लोकोमोटर कौशल जैसे झुकाव, मोडने का प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए चुनी जाने वाली जगह एवं उसकी दिशासंबंधीत जागरूकता दर्शाई गई है। प्राप्त जानकारी के अनुसार अध्ययन हेतु चयनित शालेय शिक्षकों मे शहरी संभाग के २२.७ प्रतिशत तथा ग्रामीण संभाग के ४६.० प्रतिशत शिक्षकों का प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए चुनी जाने वाली जगह एवं उसकी दिशा से संबधित जागरूकता का स्तर अत्याधिक पाया गया वहीं शहरी तथा ग्रामीण संभाग के शिक्षकों का प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए चुनी जाने वाली जगह एवं उसकी दिशा से संबधित साधारण जागरूकता का स्तर क्रमश: ४४.० तथा ३१.३ प्रतिशत था। उसी प्रकार शहरी संभाग के ३३.३ प्रतिशत तथा ग्रामीण संभाग के २२.७ प्रतिशत शिक्षकों का प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए चुनी जाने वाली जगह एवं उसकी दिशा से संबधित जागरूकता का स्तर निम्न पाया गया।

३.५ क्रीडा प्रदर्शन स्तर

तालिका क्र. ५: शारीरिक शिक्षकों के क्रीडा प्रदर्शन के स्तर के संबंध में जानकारी

	शहरी		ग्रामीण	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
उत्कृष्ट स्तर	३८	२५.३	२०	१३.३
संतोषजनक स्तर	६९	४६.०	७८	५२.०
निम्न	४३	२८.७	५२	३४.७
कुल	१५०	१००.०	१५०	१००.०

तालिका क्र. ४.४.८ मे अध्ययन हेतु चयनित ग्रामीण तथा शहरी संभाग के शारीरिक शिक्षकों के क्रीडा प्रदर्शन के स्तर के संबंध में जानकारी दर्शाई गई है। प्राप्त जानकारी के अनुसार अध्ययन हेतु चयनित शालेय शिक्षकों मे शहरी संभाग के २५.३ प्रतिशत तथा ग्रामीण संभाग के १३.३ प्रतिशत शिक्षकों का क्रीडा प्रदर्शन का स्तर उत्कृष्ट है, वहीं कुछ हद तक उत्कृष्ट स्तर के क्रीडा प्रदर्शनवाले शहरी तथा ग्रामीण संभाग के शिक्षकों का प्रमाण क्रमश:

४६.० प्रतिशत एवं ५२.० प्रतिशत पाया गया।। उसी प्रकार शहरी संभाग के २८.७ प्रतिशत एवं ग्रामीण संभाग के ३४.७ प्रतिशत शारीरिक शिक्षकों का क्रीडा प्रदर्शन का स्तर निम्न है।

शारीरिक शिक्षको के अधिशिक्षा योग्यता का खिलाडीयोंके प्रदर्शनपर होनेवाला प्रभाव

तालिका क्र. ६: शारीरिक शिक्षकों के अधिशिक्षा योग्यता का खिलाडीयोके प्रदर्शन पर होनेवाले प्रभाव के संबंध में जानकारी

मानसिक स्वास्थ्य	क्रीडा प्रदर्शन स्तर
अधिशिक्षा योग्यता	०.८४६**

प्राप्त जानकारी के अनुसार अध्ययन हेतु चयनित शालेय शिक्षकों की अधिशिक्षा योग्यता एवं क्रीडा प्रदर्शन स्तर में सार्थक रूप से **(P<0.01)** सकारात्मक सहसंबंध पाया गया।

४.० निष्कर्ष

४.१ खिलाड़ीयों को शारीरिक शिक्षण प्रदान करते समय ध्यान में रखी जाने वाली विशेष बाते

- प्रस्तुत संशोधन कार्य में प्राप्त जानकारी से यह निष्कर्ष निकाला जाता है की, शहरी संभाग के शिक्षकों की तुलना में ग्रामीण संभाग में कार्यरत (P<0.05) शारीरिक शिक्षक छात्रों को गति से संबंधित संकल्पना एवं कौशल का अभ्यास करवाते हैं।

४.२ खेल प्रशिक्षण के लिए चुनी जाने वाली जगह एवं उसकी दिशासंबंधीत जागरूकता लोकोमोटर कौशल जैसे– पैदल चलना, रस्सी कूदना, फुदकना

- प्रस्तुत संशोधन कार्य में प्राप्त जानकारी से यह निष्कर्ष निकाला जाता है की, शहरी संभाग के शिक्षकों की तुलना में ग्रामीण संभाग में कार्यरत (P<0.05) शारीरिक शिक्षकों में लोकोमोटर कौशल जैसे– पैदल चलना, रस्सी कूदना, फुदकने का प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए चुनी जाने वाली जगह एवं उसकी दिशा से संबधित अत्याधिक जागरूकता पाई गई।

४.३ जोड–तोड के कौशल जैसे – फेंकना, पकडना, किक मारना

- प्रस्तुत संशोधन कार्य में प्राप्त जानकारी से यह निष्कर्ष निकाला जाता है की, ग्रामीण संभाग के शिक्षकों की तुलना में शहरी संभाग में कार्यरत (P<0.05) शारीरिक शिक्षकों में जोड–तोड के कौशल जैसे– फेंकना, पकडना, किक मारने का प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए चुनी जाने वाली जगह एवं उसकी दिशा से संबधित साधारण जागरूकता पाई गई।

४.४ गैर–लोकोमोटर कौशल जैसे झुकाव, मोडना

- प्रस्तुत संशोधन कार्य में प्राप्त जानकारी से यह निष्कर्ष निकाला जाता है की, शहरी संभाग के शिक्षकों की तुलना में ग्रामीण संभाग में कार्यरत (P<0.05) शारीरिक शिक्षकों में गैर–लोकोमोटर कौशल जैसे झुकाव, मोडने का प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए चुनी जाने वाली जगह एवं उसकी दिशा से संबधित अत्याधिक जागरूकता पाई गई।

४.५ क्रीडा प्रदर्शन स्तर

- प्रस्तुत संशोधन कार्य में प्राप्त जानकारी से यह निष्कर्ष निकाला जाता है की, शहरी संभाग के शिक्षकों की तुलना में ग्रामीण संभाग में कार्यरत (P<0.05) शारीरिक शिक्षकों का क्रीडा प्रदर्शन का स्तर उत्कृष्ट

है। एवं शिक्षकों की अधिशिक्षा योग्यता एवं क्रीडा प्रदर्शन स्तर में सार्थक रूप से (P<0.01) सकारात्मक सहसंबंध पाया गया।

५.० आधार ग्रंथ सुची

1. देशमुख व्ही.एस. (१९९४) 'शारीरिक शिक्षा के सिध्दांत एवं इतिहास (पृ.क्र. २५–२६)
2. कावडे र. र., आधुनिक खेल संचालन एवम् प्रशिक्षण,स्पोर्ट्स पब्लिकेशन्स,२०११ पृ०१६ १७१ से १७३
3. शिन्दे बी.एस, शारीरिक शिक्षा के मूल तत्व, स्पोर्ट्स पब्लिकेशन्स, २००९ पृ० ३ १४ से २४
4. विवरण शिव : २००४, 'भारत में खेलों का इतिहास', स्पोर्ट्स पब्लिकेशन' ४२६४/३ अंसारी रोड़, दरियागंजख नई दिल्ली–२ (पृ.क्र. ४०–५२)
5. सपरा, चारू., क्रीडा अधिशिक्षा एवं निर्णयन, स्पोर्ट्स पब्लिकेशन, २००९, दिल्ली, पृ. १–१३.
6. दुबे एल.एन. खेल मनोविज्ञान, स्पोर्ट्स पब्लिकेशन्स, प्रथम संस्करण, २०१० पृष्ठ क्र. १७
7. योगेन्द्र पाण्डेय, क्रीडा मनोविज्ञान, (नागपूर : अमृत प्रकाशन, १९९९), पृ. १६८–१७१

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com